This question paper contains 2 printed pages. Your Roll No. ....

Sl. No. of Ques. Paper : 8225 GC
Unique Paper Code : 12051302
Name of Paper : हिन्दी कविता (आधुनिक काल - छायावाद तक)
Name of Course : B.A. (Hons.) Hindi
Semester : III
Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) सिद्धि-हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात,
पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते?

अथवा

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार:—
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार। 8

(ख) है कौन विघ्न ऐसा जग में, टिक सके वीर नर के मग में?
खम ठोंक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

अथवा

यह मेरी गोदी की शोभा
सुख सुहाग की है लाली।
शाही शान भिखारिन की है
मनोकामना मतवाली।।
दीपशिखा है अंधकार की
घनी घटा की उजियाली।
ऊषा है यह कमल-भृंग की
है पतझड़ की हरियाली।। 7

2. " 'यशोधरा' नारी के स्वाभिमान और कर्त्तव्य-भावना की प्रतिमूर्ति है।" अपने विचार व्यक्त कीजिए।

अथवा

P. T. O.

'यशोधरा' की काव्य-भाषा पर विचार कीजिए। 12

3. छायावादी तत्त्वों के आधार पर 'लहर' के प्रगीतों का आकलन कीजिए।

अथवा

'अशोक की चिंता' का प्रतिपाद्य लिखिए। 12

4. "निराला की कविताओं में सामान्य जीवन के चित्रों को कलात्मक अभिव्यक्ति मिली है।" स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'बादल राग' कविता की मूल-संवेदना पर प्रकाश डालिए। 12

5. 'रश्मिरथी' के आधार पर कृष्ण-कर्ण संवाद पर प्रकाश डालिए।

अथवा

सुभद्राकुमारी चौहान की कविता का मूल-स्वर स्पष्ट कीजिए। 12

6. दिए गए निर्देशों के आधार पर निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **दो** का रचना-कौशल लिखिए:

(क) नहीं दान है, नहीं दक्षिणा
खाली हाथ चली आयी।
पूजा की विधि नहीं जानती
फिर भी नाथ! चली आयी।।
पूजा और पुजापा प्रभुवर!
इसी पुजारिनी को समझो।
दान-दक्षिणा और निछावर
इसी भिखारिन को समझो।

(भाव-सौन्दर्य)

(ख) दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुन्दरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे,
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,
मधुर-मधुर है दोनों उसके अधर,
किन्तु गम्भीर; नहीं है उनमें हास-विलास।

(प्रकृति-चित्रण)

(ग) अरे कहीं देखा है तुमने
मुझे प्यार करने वाले को?
मेरी आँखों में आकर फिर
आँसू बन ढरने वाले को?

सूने नभ में आग जलाकर
वह सुवर्ण-सा हृदय गला कर
जीवन-संध्या को नहला कर
रिक्त जलधि भरने वाले को?

(प्रेमानुभूति)

6+6